हिन्दुस्तान

एम्स ने 35 किलो का ट्यूमर हटाकर रचा विश्व इतिहास

उपलब्धि

09 जून 2025 को वरिष्ठ शल्य चिकित्सकों ने की थी सर्जरी

- गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज हुआ एम्स ऋषिकेश का नाम, संस्थान में खुशी
- पिछले रिकॉर्ड से दोगुने से अधिक वजन का ट्यूमर हटाया गया

ऋषिकेश,वरिष्ठ संवाददाता। एम्स, ऋषिकेश के चिकित्सकों ने दुनियाभर के चिकित्सकीय इतिहास में अब तक के सबसे वजनदार बोन ट्यूमर की सफल सर्जरी कर विश्व पटल पर देश एवं संस्थान का नाम रोशन किया है। इस उपलब्धि के लिए संस्थान की चिकित्सकीय टीम का नाम गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज किया गया है। बीते साल जून में सर्जरी को सफलतापूर्वक अंजाम दिया गया था।

एम्स ऋषिकेश में 9 जून 2025 को संस्थान के वरिष्ठ शल्य चिकित्सकों की टीम द्वारा यह जटिल सर्जरी की गई थी। जिसमें एक 27 वर्षीय व्यक्ति के बाएं पैर की जांघ से लगभग 35 किलोग्राम के भारी ट्यूमर को सर्जरी की मदद से हटाने में सफलता हासिल की गई थी। इस जटिल सर्जरी को सफलता पूर्वक अंजाम देने वाले ऋषिकेश एम्स संस्थान के चिकित्सकों की इस टीम में हड्डी रोग विभाग के प्रोफेसर डॉ. मोहित धींगरा, सीटीवीएस विभागाध्यक्ष प्रोफेसर डॉ. अंशुमान दरबारी एवं बर्न एवं प्लास्टिक सर्जरी विभाग की प्रोफेसर डॉ. मधुवरी वाथुल्या प्रमुखरूप से शामिल रहीं। संस्थान की ओर से इस सबसे अधिक वजनी ट्यूमर की सर्जरी को सफलतापूर्वक अंजाम दिए जाने के बाद चिकित्सकीय दल की इस उपलब्धि से गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्डस प्रकाशन को अवगत कराया गया था। जिसके बाद इंग्लैंड, लंदन से प्रकाशित गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्डस की ओर से इस जानकारी का संज्ञान लिया गया और अपने स्तर से परीक्षण किया गया।

एम्स ऋषिकेश की चिकित्सकीय टीम को गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड की ओर से प्रशस्ति पत्र से नवाजा गया। ● हिन्दुस्तान

एम्स निदेशक प्रोफेसर मीनू सिंह ने बताया कि परीक्षण में उक्त जानकारी सही पाए जाने पर एम्स, ऋषिकेश में अब तक के सबसे अधिक वजनदार बोन ट्यूमर की जटिलतम सर्जरी को सफलतापूर्वक अंजाम देने वाली चिकित्सकीय टीम की उपलब्धि को गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज करने का निर्णय लिया गया।

इसके लिए एम्स, ऋषिकेश की चिकित्सकीय टीम को गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड की ओर से प्रशस्तिपत्र से नवाजा गया है। इससे पूर्व भारत के ही चिकित्सकों के एक दल ने वर्ष 2002 में उस वक्त के सबसे अधिक वजनी 16.5 किलोग्राम के ट्यूमर की सर्जरी की थी।

संवाद न्यूज

गिनीज बुक में एम्स ऋषिकेश का नाम दर्ज, 35 किलो का बोन ट्यूमर हटाया

9 जून 2025 को एक युवक के बाएं पैर की जांघ से निकाला था ट्यूमर

संवाद न्यूज एजेंसी

ऋषिकेश। एम्स के चिकित्सकों ने दुनिया के अब तक के सबसे अधिक वजनी 35 किलोग्राम के बोन ट्यूमर की सफल सर्जरी कर गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में अपना नाम दर्ज कराया है।

9 जून 2025 को संस्थान के शल्य चिकित्सकों की टीम ने एक 27 वर्षीय व्यक्ति के बाएं पैर की जांघ से लगभग 35 किलोग्राम के भारी ट्यूमर को सर्जरी की मदद से हटाने में सफलता हासिल की थी। टीम में हड्डी रोग विभाग के प्रोफेसर डॉ. मोहित धींगरा, सीटीवीएस विभागाध्यक्ष प्रोफेसर डॉ. अंशुमान दरबारी एवं बर्न एवं प्लास्टिक सर्जरी विभाग की प्रोफेसर डॉ. मधुवरी वाथुल्या शामिल रही।

चिकित्सकीय टीम को गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड की ओर से दिया गया प्रशस्तिपत्र

संस्थान की ओर से इस सबसे अधिक वजनी ट्यूमर की सर्जरी को सफलतापूर्वक अंजाम दिए जाने के बाद चिकित्सकीय दल की इस उपलब्धि से गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्डस प्रकाशन को अवगत कराया गया था। जिसके बाद इंग्लैंड, लंदन से प्रकाशित गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्डस की ओर से इस जानकारी का संज्ञान लिया गया और अपने स्तर से परीक्षण किया गया।

> यह केवल एम्स ऋषिकेश ही नहीं बल्कि पूरे देश के लिए गर्व का क्षण है। संस्थान हर मरीज को सर्वोत्तम और अत्याधुनिक चिकित्सा उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध है। - **प्रो. मीनू सिंह,** निदेशक, एम्स ऋषिकेश

एम्स प्रशासन ने बताया कि परीक्षण में उक्त जानकारी सही पाए जाने पर इस रिकॉर्ड को गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज किया गया है। इसके लिए एम्स ऋषिकेश की चिकित्सकीय टीम को गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड की ओर से प्रशस्तिपत्र दिया गया है। इससे पूर्व भारत के ही चिकित्सकों के एक दल ने वर्ष 2002 में 16.5 किलोग्राम के ट्यूमर की सर्जरी की थी।

अमर उजाला

चिकित्सकों की सुरक्षा, सम्मान प्राथमिकता : सीएम

राष्ट्रीय चिकित्सक दिवस पर आईएमए ने आयोजित किया कार्यक्रम, उत्कृष्ट कार्यों के लिए 30 डॉक्टर सम्मानित

संवाद न्यूज एजेंसी

देहरादून। चिकित्सकों की सुरक्षा और सम्मान सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है। चिकित्सक योगदान से ही स्वस्थ समाज का सपना देखा जा सकता है। ऐसे में चिकित्सकों को भी अपनी सेहत का ध्यान रखना होगा।

पहाड़ के दुर्गम क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाएं पहुंचाने में चिकित्सकों की भूमिका अहम है। यह बातें सीएम पुष्कर सिंह धामी ने इंडियन मेडिकल एसोसिएशन (आईएमए) के सम्मान समारोह में कही। बुधवार को आईएमए ने राष्ट्रीय चिकित्सक दिवस के उपलक्ष्य में कार्यक्रम का आयोजन किया।

इस दौरान स्वास्थ्य के क्षेत्र में बेहतर कार्य करने वाले 30 चिकित्सकों को सम्मानित किया गया। मुख्य अतिथि सीएम पुष्कर सिंह धामी ने कहा कि भारतीय संस्कृति में चिकित्सकों को विशेष सम्मान दिया गया है। चिकित्सक अपनी सेवा, संवेदना और समर्पण से मानवता की सबसे बड़ी सेवा करते हैं। उत्तराखंड में चिकित्सक कठिन भौगोलिक परिस्थितियों के बीच भी जनसेवा कर रहे हैं और पर्वतीय क्षेत्रों में स्वास्थ्य व्यवस्था की मजबूती के महत्वपूर्ण आधार हैं।

कोरोना महामारी के दौरान चिकित्सकों, नर्सिंग स्टाफ, पैरामेडिकल कर्मियों और समस्त स्वास्थ्य योद्धाओं के योगदान को याद करते हुए कहा कि संकट के उस दौर में स्वास्थ्य कर्मियों ने अपने कर्तव्य को सर्वोच्च प्राथमिकता दी।

डॉक्टर दिवस पर आयोजित इंडियन मेडिकल एसोसिएशन के कार्यक्रम में मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के साथ सम्मानित डॉक्टर। स्रोत : सूचना विभाग

अनेक चिकित्सकों ने मानव जीवन की रक्षा के लिए अपने प्राणों का बलिदान तक दिया, उनका त्याग सदैव प्रेरणादायी रहेगा। कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश और प्रदेश में स्वास्थ्य सेवाओं का लगातार विस्तार किया जा रहा है। आयुष्मान भारत योजना के माध्यम से लाखों जरूरतमंद परिवारों को कैशलेस उपचार की सुविधा मिल रही है।

वर्तमान में प्रदेश में पांच मेडिकल कॉलेज संचालित हैं जबकि दो मेडिकल कॉलेज निर्माणाधीन हैं। देहरादून, हल्द्वानी और श्रीनगर मेडिकल कॉलेजों में सुपर स्पेशियलिटी सेवाओं को बढ़ाया जा रहा है। हल्द्वानी में आधुनिक कैंसर संस्थान का निर्माण प्रगति पर है।

सीएम ने भारत रत्न डॉ. बिधान चंद्र रॉय की जयंती और पुण्यतिथि पर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। कहा कि डॉ. बिधान चंद्र रॉय का जीवन चिकित्सा सेवा, मानव कल्याण और राष्ट्र निर्माण के प्रति समर्पण की प्रेरणा देता है। इस दौरान विधायक सविता कपूर, हिमालय इंस्टीट्यूट के चेयरमैन डॉ. विजय धस्माना, इंडियन मेडिकल एसोसिएशन के अध्यक्ष डॉ. महेश कुड़ियाल, सचिव डॉ. अंकित परासर और कोषाध्यक्ष डॉ. राहुल अवस्थी आदि मौजूद रहे।

इन्हें मिला सम्मान

सम्मान समारोह में डॉ. अनुज सिंघल, डॉ. सुमिता प्रभाकर, डॉ. रेणु धस्माना, डॉ. रजनीश अरोड़ा, डॉ. लूना पंत, डॉ. विमल दीक्षित, डॉ. राजेश माहेश्वरी, डॉ. महेश रमोला, डॉ. संजय उप्रेती, डॉ. आशा रावल, डॉ. अरुण कुमार, डॉ. विमल कुमार नौटियाल, डॉ. विवेक अग्रवाल, डॉ. शिप्रा अग्रवाल, जीसी पंचोली, डॉ. पारुल जिंदल, डॉ. विशाल कुलश्रेष्ठ, डॉ. मनीष मित्तल, डॉ. राजेन्द्र श्रीवास्तव, डॉ. शिवम डंग,डॉ. वरुणा जेठानी, डॉ. ज्योति रैना, डॉ. तुषार अग्रवाल, डॉ. जय आहूजा, डॉ. ध्रुव गुप्ता, डॉ. वरुण अग्रवाल, रोशिता गुप्ता, गौरी बिष्ट, धीरज गोयल को सम्मानित किया गया।

दैनिक जनवाणी

गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में एम्स, ऋषिकेश का नाम दर्ज

● जनवाणी ब्यूरो, ऋषिकेश

एम्स, ऋषिकेश के चिकित्सकों ने दुनियाभर के चिकित्सकीय इतिहास में अब तक के सबसे वजनदार बोन ट्यूमर की सफलतम सर्जरी कर विश्व पटल पर देश एवं एम्स संस्थान का नाम रोशन किया है। इस उपलब्धि के लिए संस्थान की चिकित्सकीय टीम का नाम गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज किया गया है।विभिन्न विभागों के चिकित्सकीय दल ने उक्त सर्जरी को गतवर्ष जून-2025 में सफलतापूर्वक अंजाम दिया था। इस ऐतहासिक उपलब्धि पर संस्थान की कार्यकारी निदेशक एवं सीईओ प्रोफेसर डॉ. मीनू सिंह ने प्रसन्नता व्यक्त की है। उन्होंने इसे इतिहास गढ़ने की संज्ञा दी और कहा कि एम्स संस्थान मरीजों को हरसंभव चिकित्सा सेवा उपलब्ध कराने को प्रतिबद्ध है। गौरतलब है कि एम्स ऋषिकेश में 9 जून 2025 को संस्थान के वरिष्ठ शल्य चिकित्सकों की टीम द्वारा यह जटिल सर्जरी की गई थी, जिसमें एक 27 वर्षीय व्यक्ति के बाएं पैर की जांघ से लगभग 35 किलोग्राम के भारी ट्यूमर को सर्जरी की मदद से हटाने में सफलता हासिल की गई थी।

उत्तराखंड भास्कर

एम्स ऋषिकेश ने रचा इतिहास, गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज हुआ नाम

ऋषिकेश। अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) ऋषिकेश ने चिकित्सा जगत में एक ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल करते हुए गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में अपना नाम दर्ज कराया है। संस्थान के चिकित्सकों ने गत वर्ष जून 2025 में दुनिया के अब तक के सबसे वजनदार बोन ट्यूमर की सफल सर्जरी कर 27 वर्षीय मरीज को नया जीवन दिया था।

मरीज की बाईं जांघ से लगभग 35 किलोग्राम वजनी ट्यूमर को सफलता-पूर्वक हटाया गया, जिसे गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स ने आधिकारिक रूप से मान्यता प्रदान की है।

यह जटिल सर्जरी 9 जून 2025 को एम्स ऋषिकेश में वरिष्ठ चिकित्सकों की टीम द्वारा अंजाम दी गई थी। सर्जरी टीम में हड्डी रोग विभाग के प्रोफेसर डॉ. मोहित धींगरा, सीटीवीएस विभागाध्यक्ष प्रोफेसर डॉ. अंशुमान दरबारी एवं बर्न एवं प्लास्टिक सर्जरी विभाग की प्रोफेसर डॉ. मधुवारी वाथुल्या प्रमुख रूप से शामिल रहे।

संस्थान द्वारा इस उपलब्धि की जानकारी गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स को भेजी गई थी, जिसके बाद लंदन स्थित संस्था परीक्षण कर इसे विश्व रिकॉर्ड के रूप में मान्यता दी। इसके लिए चिकित्सकीय दल को प्रशस्ति पत्र भी प्रदान किया गया है।

ऐतिहासिक उपलब्धि

- 35 किलोग्राम वजनी ट्यूमर की सफलतापूर्वक सर्जरी
- गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स ने दी आधिकारिक मान्यता
- एम्स ऋषिकेश के चिकित्सकों को मिला प्रशस्ति पत्र

> यह केवल एम्स ऋषिकेश ही नहीं, बल्कि पूरे देश के लिए गर्व का क्षण है। संस्थान हर मरीज को उच्चस्तरीय चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध है।
>
> – प्रो. डॉ. मीनू सिंह
> कार्यकारी निदेशक एवं सीईओ
> एम्स ऋषिकेश

न्यूजनेत्र
आओ बदलें नजरिया

एम्स, ऋषिकेश ने रचा इतिहास
गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में नाम दर्ज

गतवर्ष की गई थी अब तक के सबसे वजनदार बोन ट्यूमर की सफलतम सर्जरी

- मरीज के पैर की जांघ से 35 किलोग्राम भार का ट्यूमर हटाकर दिया था जीवनदान

ऋषिकेश, 2 जुलाई (न्यूजनेत्र ब्यूरो) : एम्स, ऋषिकेश के चिकित्सकों ने दुनियाभर के चिकित्सकीय इतिहास में अब तक के सबसे वजनदार बोन ट्यूमर की सफलतम सर्जरी कर विश्व पटल पर देश एवं एम्स संस्थान का नाम रोशन किया है। इस उपलब्धि के लिए संस्थान की चिकित्सकीय टीम का नाम गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज किया गया है। विभिन्न विभागों के चिकित्सकीय दल ने उक्त सर्जरी को गतवर्ष जून-2025 में सफलतापूर्वक अंजाम दिया था।

इस ऐतिहासिक उपलब्धि पर संस्थान की कार्यकारी निदेशक एवं सीईओ प्रोफेसर डॉ. मीनू सिंह ने प्रसन्नता व्यक्त की है। उन्होंने इसे इतिहास गढ़ने की संज्ञा दी और कहा कि एम्स संस्थान मरीजों को हरसंभव चिकित्सा सेवा उपलब्ध कराने को प्रतिबद्ध है।

प्रो. डॉ. मोहित धींगरा, प्रो. डॉ. मधुवरी वाथुल्या, प्रो. डॉ. मीनू सिंह (कार्यकारी निदेशक एवं सीईओ), प्रो. डॉ. अंशुमान दरबारी।

चिकित्सकीय दल

- प्रो. डॉ. मोहित धींगरा
  हड्डी रोग विभाग
- प्रो. डॉ. अंशुमान दरबारी
  अध्यक्ष, सीटीवीएस विभाग
- प्रो. डॉ. मधुवरी वाथुल्या
  बर्न एवं प्लास्टिक सर्जरी विभाग

उपलब्धि की खास बातें

- 27 वर्षीय मरीज के पैर की जांघ से हटाया गया 35 किलोग्राम का ट्यूमर
- यह अब तक की दुनिया की सबसे वजनदार बोन ट्यूमर सर्जरी
- सर्जरी जून-2025 में सफलतापूर्वक की गई
- एम्स ऋषिकेश का नाम दर्ज हुआ गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में

क्या था पूरा मामला ?

गौरतलब है कि एम्स ऋषिकेश में 9 जून 2025 को संस्थान के वरिष्ठ शल्य चिकित्सकों की टीम द्वारा यह जटिल सर्जरी की गई थी, जिसमें एक 27 वर्षीय व्यक्ति के बांएं पैर की जांघ से लगभग 35 किलोग्राम के भारी ट्यूमर को सर्जरी की मदद से हटाने में सफलता हासिल की गई थी।

इस जटिल सर्जरी को सफलता पूर्वक अंजाम देने वाले ऋषिकेश एम्स संस्थान के चिकित्सकों की इस टीम में हड्डी रोग विभाग के प्रोफेसर डॉ. मोहित धींगरा, सीटीवीएस विभागाध्यक्ष प्रोफेसर डॉ. अंशुमान दरबारी एवं बर्न एवं प्लास्टिक सर्जरी विभाग की प्रोफेसर डॉ. मधुवरी वाथुल्या प्रमुखरूप से शामिल रहीं।

संस्थान की ओर से इस सबसे अधिक वजनी ट्यूमर की सर्जरी को सफलतापूर्वक अंजाम दिए जाने के बाद चिकित्सकीय दल की इस उपलब्धि से गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्डस प्रकाशन को अवगत कराया गया था। जिसके बाद इंग्लैंड, लंदन से प्रकाशित गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्डस, (जो कि विश्वभर में विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े लोगों के उपलब्धिपूर्ण कार्यों के संग्रह व उसके प्रकाशन से दुनिया को अवगत कराने वाली महत्वपूर्ण बुक है,) की ओर से इस जानकारी का संज्ञान लिया गया और अपने स्तर से परीक्षण किया गया। बताया गया है कि, परीक्षण में उक्त जानकारी सही पाए जाने पर एम्स, ऋषिकेश में अब तक सर्जरी को सफलतापूर्वक अंजाम देने वाली चिकित्सकीय टीम की उपलब्धि को गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज करने का निर्णय लिया गया। इसके लिए एम्स, ऋषिकेश की चिकित्सकीय टीम को गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड की ओर से प्रशस्तिपत्र से नवाजा गया है।

मरीज को मिला नया जीवन

35 किलोग्राम के विशाल ट्यूमर के कारण मरीज को चलने-फिरने में भारी कठिनाई हो रही थी। सर्जरी के बाद मरीज अब स्वस्थ है और सामान्य जीवन जी रहा है।

सर्जरी के दौरान चिकित्सकीय टीम

इतिहास गढ़ने की उपलब्धि

एम्स ऋषिकेश की यह उपलब्धि हम सभी के लिए गर्व की बात है। हमारा संस्थान हमेशा मरीजों को उत्तम चिकित्सा सेवा देने और नए कीर्तिमान स्थापित करने के लिए प्रतिबद्ध है।

– प्रो. डॉ. मीनू सिंह
कार्यकारी निदेशक एवं सीईओ, एम्स ऋषिकेश

ऐतिहासिक तुलना

इससे पूर्व भारत के ही चिकित्सकों के एक दल ने वर्ष 2002 में उस वक्त के सबसे अधिक वजनी 16.5 किलोग्राम के ट्यूमर की सर्जरी की थी।

> एम्स ऋषिकेश की यह उपलब्धि चिकित्सा विज्ञान में समर्पण, कौशल और टीमवर्क का अद्भुत उदाहरण है।